

---

# Shri Gurubhajana Stotram

---

## श्रीगुरुभजनस्तोत्रम् २

---

### Document Information

Text title : Shri Gurubhajana Stotram 2

File name : gurubhajanastotram2.itx

Category : deities\_misc, svAminArAyaNa, gurudev, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Author : dInAnAtha bhaTTa

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीगुरुभजनस्तोत्रम् २



(स्त्रग्धरा-छन्द)

धर्मस्त्याज्यो न कैश्चित् स्वनिगमविहितो वासुदेवे च भक्ति-  
र्दिव्याकारे विधेया सितघन-महसि ब्रह्मणैक्यं निजस्य ।  
निश्चित्यैवान्य-वस्तुन्यणुमपि च रतिं सम्परित्यज्य सन्त-  
स्तन्माहात्म्याय सेव्या इति वदति निजान् धार्मिको नीलकण्ठः ।

दृष्टाः स्पृष्टा नता वा कृतपरिचरणा भोजिताः पूजिता वा  
सद्यः पुंसामघौघं बहुजनि-जनितं घ्नन्ति ये वै समूलम् ।  
प्रोक्ताः कृष्णेन ये वा निजहृदयसमा यत्पदे तीर्थजातं  
तेषां मातः प्रसङ्गात् कमिह ननु सतां दुर्लभं स्यान्मुमुक्षोः ।

(वेतालीय छन्द)

भवसम्भव-भीतिभेदनं सुखसम्पत्करुणा-निकेतनम् ।  
व्रतदानतपः क्रियाफलं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ १ ॥

करुणामय-चारुलोचनं शरणायात-जनार्तिमोचनम् ।  
पतितोद्धारणाय तत्परं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ २ ॥

निजतत्त्वपथावबोधनं जनतायाः स्वत एव दुर्गमम् ।  
इति चिन्त्य गृहीतविग्रहं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ ३ ॥

विधिशम्भु मुखैरनिग्रहं भवपाथोधि-परिभ्रमाकुलम् ।  
अपिधार्य मनो नरप्रभं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ ४ ॥


निजपादपयोज-कीर्तनं सततं स्याद्भवजीवगोचरम् ।  
इति यः कुरुते क्रतृत्सवं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ ५ ॥

बहिरीक्षणलोकमानुषं निजदत्ताम्बकदर्शिनां हरिम् ।  
भजनीयपदं जगद्गुरुं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ ६ ॥


शरणागत-पापपर्वतं गणयित्वा न तदीयसद्गुणम् ।

अणुमप्यतुलं हि मन्यते सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ ७ ॥  
भववारिधिमोक्षसाधनं गुरुराज-प्रकटस्वसङ्गमम् ।  
प्रकटीकृतवान् कृपावशः सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥ ८ ॥  
भगवान् कृपया त्वया कृतं जनतायामुपकारमीद्रशम् ।  
क्षमते प्रतिकर्तुमत्र कः कुरुते दीन जनस्ततोऽजलिम् ॥ ९ ॥  
इति श्री दीनानाथभट्टविरचितं श्रीगुरुभजनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

---

——  
*Shri Gurubhajana Stotram*

pdf was typeset on August 9, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

